SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

गोंड जनजाति : लोक–कथाएँ

मधुलता बारा, (Ph.D.), शोध निर्देशक, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
बरातू राम ध्रुव, शोधार्थी, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

मधुलता बारा, (Ph.D.), शोध निर्देशक,
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
बरातू राम ध्रुव, शोधार्थी,
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/11/2022
Revised on : -----
Accepted on : 09/11/2022
Plagiarism : 00% on 01/11/2022

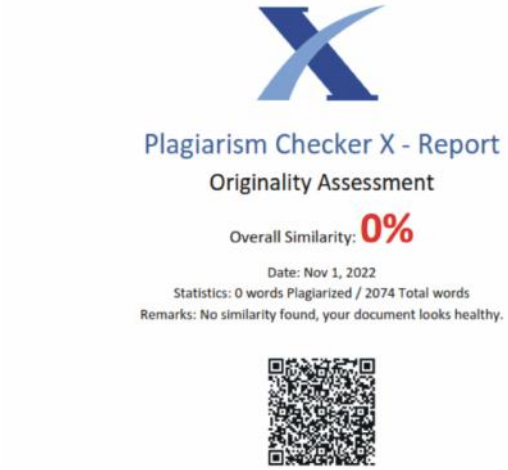

शोध सार

वैभवशाली अखण्ड भारत के पूर्वी हिस्से में एक छोटा–सा प्रदेश है जिसको छत्तीसगढ़ कहा जाता है। छत्तीसगढ़ को प्रकृति ने अनुपम सौंदर्य का वरदान और विभिन्न अनमोल खनिजों का भण्डार दिया है। यहाँ हरे–भरे जंगलों से ढँकी हुई पहाड़ियाँ, नदियों की कल–कल आवाज़ तथा पानी में डूबे धान के स्यामल खेत और ऊँचाइयों से गिरते हुए सुंदर मनोरम जलप्रपात व झरने हैं। छत्तीसगढ़ को मुख्यतः आदिवासी समुदायों का प्रदेश कहा जाता है। यहाँ विभिन्न प्रकार के आदिवासी समुदाय निवास करते हैं, जिनमें सबसे प्रमुख व सर्वाधिक जनसंख्या में गोंड़ जनजाति पूरे छत्तीसगढ़ अंचल में निवासरत् हैं। इनके अपने विशेष रीति–रिवाज, पूजा–पाठ, परंपरा तथा लोक–कथाएँ विभिन्न रूढ़ियों को लिए हुए आज भी विद्यमान हैं। छत्तीसगढ़ में कई गोंड राजाओं ने कई वर्षों तक शासन किया है, जिसका प्रमाण आज भी छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

मुख्य शब्द

गोड़ जनजाति, लोक कथाएँ, अखंड भारत.

प्रस्तावना

भारत के अनेक राज्यों में विभिन्न प्रकार के आदिवासी समुदायों के लोग अधिक–से–अधिक संख्या में निवास करते हैं और इन समुदायों की अपनी भिन्न–भिन्न संस्कृति, परंपरा एवं मान्यताएँ हैं। इन समुदायों में गोंड आदिवासी समुदाय की एक बड़ी जनसंख्या देखने को मिलती है और इनके देवी–देवताओं की संख्या भी अधिक दिखाई देते हैं, जो इन लोगों को दुःख के समय में सुख–शांति व समृद्धि प्रदान कर उनके कष्टों को दूर करते हैं। गोंड जनजाति प्रकृति पुजारी होने के कारण उनकी कथाएँ वृक्ष–पुष्प, पशु–पक्षी, नदी–नाले एवं छोटे–बड़े

पर्वत को उनकी कथाओं का अभिन्न अंग के रूप में पढ़ने, देखने व सुनने के लिए मिलता है और यह लोक–कथाएँ ही उन आदिवासी गोंड समुदाय के लोगों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं। जितना पुराना इतिहास गोंड जनजाति का है, उतना ही पुराना इतिहास उनकी कहानियों व लोक–कथाओं का है। इनके लोक–कथाओं में इनके जीवन की हर पहलू की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पहले इनकी लोक–कथाएँ, लोकगीत, लोकपर्व, लोकनाट्य, रीति–रिवाज एवं धार्मिक मान्यताएँ मौखिक रूप में विद्यमान रही थीं, लेकिन धीरे–धीरे यह परंपरा विकसित होकर वर्तमान समाज में हमें लिखित रूप में भी प्राप्त हो रही हैं। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के गोंड राजाओं व उनके देवी–देवताओं की समृद्ध गौरव–गाथा एवं लोक–कथाएँ आज भी लोगों की जुबान पर हैं। वहाँ आज भी कई लोक–कथाएँ प्रचलित हैं, जो विभिन्न चमत्कार लिए हुए वहाँ के लोगों के जन–जीवन से जुड़ी हुई उनके आस्था, परंपरा, मान्यताएँ व विश्वास का प्रतीक रूप में दिखाई देती है।

लोक–कथाओं के संबंध में विद्वानों का विचार

गोंड जनजाति की लोक–कथाओं के संदर्भ में कई विद्यानों ने अपना मत अभिव्यक्त किए हैं:

श्रीचन्द्र जैन ने लिखा है– ''ये कथाएँ वनवासियों के सुख–दुख को प्रदर्शित करती है, इनके सामाजिक संगठन की एक प्राचीन रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं तथा धार्मिक विश्वासों का एक विस्तृत इतिहास बताती हैं। संसार कैसे बना? आकाश चारों ओर कैसे फैल गया ? वृक्ष किस प्रकार धरती पर खड़े हो गये हैं ? सागर का पानी कैसे खारा बना? नदियों जल पर नााव कैसे चलती है ? आदि हजारों उर्वर कल्पनाशक्ति को प्रदर्शित करती है।''[1] लेखक ने आदिवासियों में प्रचलित विभिन्न परंपरा, मान्यताएँ व कथाओं का उल्लेख किया है।

जनजातियों की लोक–कथाओं पर लेखक उप्रेति हरिश्चन्द्र ने अपना विचार रखा है– ''आदिवासी मानव का मस्तिष्क कल्पना शून्य नहीं हैं। अपनी जाति की उत्पत्ति तथा सृष्टि रचना आदि के संबंध में प्रत्येक जनजाति में भिन्न–भिन्न धारणाएँ रही हैं, जो कि बाद में कल्पित कथाएँ बन गई। इन कथाओं में सृष्टि की उत्पत्ति तथा रचना के वर्णन के अतिरिक्त अनेक दैवीय घटनाओं का वर्णन भी होता है, जिनमें लोगों का अटूट विश्वास होता है तथा वे उन्हें सत्य मानकर चलते हैं। पर एक ही विषय में दो विभिन्न जनजातियों के भिन्न–भिनन विचार हो सकते हैं, जैसे– सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में एक जनजाति में जो कथा प्रचलित है दूसरे में कोई अन्य हो सकती है।''[2] उप्रेति हरिष्चन्द्र ने सृष्टि की उत्पत्ति और आदिवासयों के विचार, धारणाएँ, मान्यताएँ तथा विभिन्न प्रचलित कथाओं पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है।

हिंदी के प्रसिद्ध आदिवासी चिंतक व साहित्यकार हीरालाल शुक्ल ने आदिवासियों में गोंड जनजाति की लोक–कथाआं को लेकर कहा है– ''गोंडों की उपजाति माड़िया की लोक–कथाएँ और लोकगीत उनके पूर्वजों के वीरतापूण्र कार्यों से भरे हुए हैं। राजा, योद्धा, जोगी, सिरहा, गुनिया आदि की कथाओं से इनका लोक–साहित्य आप्लावित है।''[3] शुक्ल जी ने गोंडों की उपजाति माड़िया समुदाय की वीरता परक लोक–गाथाओं को लेकर अपने विचार व्यक्त करते हुए आदिवासी लोक–जीवन पर उसके प्रभाव व महत्व प्रतिपादित करने का प्रयास किया है।

गोंड जनजाति : लोक–कथाएँ

छत्तीसगढ़ की बस्तर अंचल में गोंड जनजाति की बहुत सी दंत व लोक–कथाएँ प्रचलित हैं। इन्हीं कथाओं में कडरेगाल देव एवं तलुरमुत्ते की कथा अत्यंत प्रसिद्ध है– ''जब बस्तर राज शुरू हुआ था तब राजाडोकरा वारंगल में निवास करते थे। उनके छोटे भाई थे गोटाल डोकरा। जब दंतेश्वरी माई बस्तर से आई तब राजा डोकरा ने बूढ़ाडोकरा की बहन पटरानी के लमसेना के रूप में उनका अनुसरण किया और वे भी बस्तर आ पहुँचे। गोटाल डोकरा भी उनके साथ थे पर वो अपने भाई से दूर रहने के लिए माड़ियन राज चले गए। राजाडोकरा बड़े डोंगर में बस बए और उन्होंने पाटरानी से विवाह कर लिया। इनसे हुंगाडोकरा, पाहेहुंगा, वाइकिंरूंगे, गुट्टेहुंगे और लिगोंडोकरा का जन्म हुआ। बड़े डोंगर के बूढ़ादेव और उसके भाई सम्राट डोकरा की बहुत सी कन्याएँ थीं। राजाडोकरा के चार बड़े पुत्र थे। वे सम्राट डोकरा की चार कन्याओं को उठा कर ले गए। बूढ़ाडोकरा एवं सम्राट

डोकरा के एक सौ चालीस पुत्र और इतनी ही पुत्रियाँ थीं। उन्होंने लिगोंडोकरा से कहा ये सभी कन्याएँ ''तुम्हारे लिए हैं'', लेकिन लिगों बहुत पवित्र थे, बोले– ''नहीं हमारी विवाह करने की इच्छा नहीं है'', सो चारों भाइयों ने कहा ठीक है तुम घर पर रहो और हम गाँव इनके न्याओं को दे देते हैं। चारों भाइयों ने बची हुई कन्याओं को एक मछली की टोकरी में रखा और एक कछुए पर बैठ गए। उनकी मायावी शक्ति से कछुआ हाथी बन गया। हाथी पर बैठकर भाइयों ने धीरे–धीरे बस्तर राज का दौरा किया। दौरा करते–करते उन्होंने एक लड़की चार गाँवों को दी, एक सात गाँवों को। इस तरह जिस गाँव में जो कन्या मिली वह वहाँ की माता देवी बन गई।''[4] इस तरह कडरेगाल देव की कथा बस्तर की प्रमुख लोक–कथाओं में एक है।

माता मावली की जन्म–संबंधी कथा है– ''मावली का वास्तविक नाम माबली था, जिसका अर्थ है मां जिसने स्वयं का बलिदान किया। अधिकतर ग्रामीण अपने दैनिक जीवन–यापन के लिए कंदमूल, फल एकत्रित करने जाया करते थे, पर मावली के माता–पिता कंदमूल बेचकर अपना जीवन–यापन करते थे। एक दिन मावली की माता दूर के साप्ताहिक बाजार से प्याज खरीदकर लाई और एक बरगद के वृक्ष के नीचे दुकान लगाकर बेचने लगी। अचानक बरसात प्रारंभ हो गया। गर्भवती होने के कारण वह दौड़ कर अपने घर जाने में सक्षम नहीं थी इसलिए वह बरगद पेड़ के नीचे ही बैठी रह गई, जहाँ रात्रि में उनहोंने मावली को जन्म दिया और बेहोश हो गई। सुबह जब मां की आँख खुली तो उसने देखा कि बरगद की जो जड़ें लटक रही थी उसने शिशु को सुरक्षित रखा था।''[5] इस तरह आदिवासी गोंड जनजाति में मावली माता बस्तर अंचल के साथ लगभग छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों के सभी गाँवों में आराध्य देवी की रूप में स्थापित की गई है। गाँव के सभी देवी–देवता किसी भी विशेष पर्व पर मावली के स्थान पर एकत्रित होते हैं ऐसी मान्यता है और मावली माता गाँव की सुरक्षा करने के साथ गाँव के सभी देवों की संगठित और नियंत्रित करती हैं, ऐसा कहा जाता है।

भीमादेव संबंधी लोककथा में आदिवासी गोंड जनजाति में यह मान्यता है कि यदि भीमादेव प्रसन्न रहते हैं तो अच्छी वर्षा होती है और अच्छी वर्षा होने के कारण धान की फसल भी अच्छी होती है और वर्षा न होने की स्थिति में इन्द्र देवता से अंतिम पुकार के रूप में भीमा–भिमिन का विवाह संपन्न कराया जाता है। भीमादेव के बारे में यह कथा प्रचलित है– ''आदिवासियों में भीमा नाम का एक राजा था, जो बहुत आलसी था। वह राज–काज के काम में रुचि नहीं लेता था। आलस्य के कारण उसे अपनी प्रजा के सुख–दुख की चिंता नहीं रहती थी। एक बार लगातार चार वर्षों तक वर्षा नहीं हुई, जिससे राज्य में अकाल पड़ गया। प्रजा ने राजा के पास जाकर सहायता करने की विनती की इस पर राजा को अपने आलस्य पर बड़ी लज्जा आई। उसने तत्काल इन्द्रदेव से प्रार्थना करना शुरू की। इन्द्रदेव भीमा के सामने प्रगट हुए। इन्द्रदेव ने कहा– जिस राज्य का राजा आलसी हो, मैं वहाँ वर्षा क्यों करता ? तब भीमा ने कहा– अब मुझे अपनी भूल समझ में आ गई है। मेरे आलसी होने के कारण मेरी प्रजा को कष्ट उठाना पड़ रहा है, इसलिए मैंने आलस्य छोड़ दिया है। इस पर इन्द्रदेव ने कहा– यदि ऐसा है तो तुम स्वयं खेत पर आओ, वहाँ आकर हल चलाओ, खेतों को जातो और बीज बोओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं समझ जाऊँगा कि तुमने अपना आलसी स्वभाव बदल दिया है और तब मैं अच्छी वर्षा करूंगा। भीमा ने इन्द्रदेव के कहने के अनुसार खेत जाकर हल चलाया और बीज बोया। इसके बाद राज्य में खूब वर्षा हुई और अच्छी फसल हुई।''[6] इस प्रकार समूचे बस्तर अंचल में आज भी भीमादेव की पूजा की जाती है।

जल–कन्याओं की कथा बस्तर की गोंड जनजाति समुदाय में जलकन्या की कथा भी अधिक प्रसिद्ध है– ''प्राचीन काल से ही जलपरियों की पूजा की जाती रही है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जल में कुमारी कन्याएँ हैं जो कि जल की वृष्टि कराती हैं। जब कभी पृथ्वी पर वर्षा न हो रही हो, जिससे फसल एवं मानव, पशु–पक्षियों, वनस्पति आदि को क्षति पहुँचती हो, तो इन परिस्थितियों में जल–कन्याओं की पूजा की जाती है। कुआँ खोदना, बांध का निर्माण हो या मछली पकड़ने के लिए किसी तालाब, नदी या झीलों में प्रवेश करना हो तो जल–कन्याओं की स्तुति की जाती है। इन जल–परियों की पूजा प्रत्येक ग्राम के लोग करते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ तो सबसे पहले जलपरियों के द्वारा वर्षा कराई गई। तब वनस्पतियों, जीव–जंतु एवं मानव की उत्पत्ति हुई। जब मानव अपनी बस्तियाँ बसाना शुरू किया तो पहले पानी की सुविधा को ध्यान में रखा और यह

भी सत्य है कि प्राचीन काल में मानव सभ्यताओं का विकास जल के आस–पास नदी घाटियों में ही हुआ था।''[7] इस तरह जलपरियों की कथा गोंड जनजाति के साथ समूचे बस्तर अंचल में आज भी विद्यमान है।

बस्तर गोंड जनजाति में गोत्र संबंधी लोककथा इस प्रकार चर्चित है– ''पाट राजा एवं उनकी पत्नी का भाई उसेण्डी मुड़िया जो घोटपाल में (बारसुर एंव गीदम के बीच) स्थित है जो लेकामी गोत्र के गोत्र–देवता हैं। अबूझमाड़िया एवं दंडामी माड़िया को दादा भाई (भ्रातृ गोत्र) अक्को मामा (पत्नी गोत्र) दो भागों में विभाजित करता था। उस समय में अबूझमाड़िया एवं दंडामी माड़िया के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित होते थे। दोनों परस्पर तीज–त्यौहार सामूहिक रूप से मनाते थे। एक बार गुमलेर गोत्र के एक अबूझमाड़िया घोटापाल करसाड़ में भाग लेने कुल्हाड़ी लेकर आए हुए थे। उनमें सं गुमलेर गोत्र के अबूझमाड़िया गाँव में सेम की लता को अचानक काट दिया, जिससे विवाद शुरू हुआ और एक बूढ़ी (कुरूम मुत्तई) ने अबूझमाड़िया को श्राप दिया कि आज से मंदिर नदी के दक्षिण भाग में वे किसी भी सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भाग नहीं ले सकेंगे। तब से अबूझमाड़िया एवं दंडामी माड़िया के बीच वैवाहिक संबंध नहीं होता है एवं धार्मिक पर्वों में भी सम्मिलित नहीं होते।''[8] गोंड जनजाति कई प्रकार के गोत्रों में बँटा हुआ है और उन सभी गोत्रों की अपनी–अपनी लोक–कथाएँ सुनने तथा पढ़ने को मिलता है।

निष्कर्ष

विश्व के किसी भी कोने में निवासरत आदिवासी समुदायों में गोंड जनजाति अपनी वैभवशाली परंपरा, मान्यता, धार्मिक रीति–रिवाज एवं अपनी समृद्ध लोककथा लिए अत्यंत प्रसिद्ध है।गोंड जनजाति भारत के कई राज्यों, जैसे– मध्यप्रदेश, झारखण्ड, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश में बड़ी संख्या में निवास करते हैं। मध्यप्रदेश के मंडला, बालाघाट, बैहर उवं छिंदवाड़ा तथा छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के गोंड जनजाति के राजाओं की लोककथा विशेष प्रसिद्ध है। गोंड जनजाति संपूर्ण छत्तीसगढ़ में निवास करते हैं, जो विभिन्न परंपरा, लोक– संस्कृति तथा लोक–कथाओं के लिए विशेष जाना जाता है।

संदर्भ सूची

1. जैन, श्रीचन्द्र. *लोकथा विज्ञान.* जयपुर, मंगल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1977, पृ. 43.
2. उप्रेति, हरिष्चन्द्र. *भारतीय जनजातियाँ सामाजिक विज्ञान.* जयपुर, हिन्दी रचना केन्द्र, संस्करण 1970, पृ. 148.
3. शुक्ल, हीरालाल. *आदिवासी अस्मिता और विकास.* भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करण 1986, पृ. 121.
4. नुरूटी, किरण. *बस्तर की गोंड जनजाति की धार्मिक अवधारणा.* नागपुर, गोंडवाना–गोंडी साहित्य परिषद्, प्रथम संस्करण, 2012, पृ. 25.
5. वही, पृ. 27.
6. वही, पृ. 30–31.
7. वही, पृ. 34.
8. वही, पृ. 68.

****